JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वृद्धजनों की वंचना की समस्या का समाजशास्त्रीय अध्ययन

महेन्द्र प्रताप तिवारी
शोध छात्र (समाजशास्त्र)
डॉ राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उत्तर प्रदेश भारत ।

सारांश

उपभोक्तावादी संस्कृति, पश्चिमीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण आदि प्रक्रियाओं के प्रभाव के कारण नातेदारी संबन्धों में निहित सामंजस्य और अनुकूलन की शक्ति का क्षरण हुआ है । इन परिवर्तनों को अपनाने के लिए युवा पीढ़ी के अवांछित दबाव के कारण बुज़ुर्ग असहज हो जाते हैं, जिसकी परिणति दोनों पीढ़ियों के बीच संघर्ष में होती है । जैसे-जैसे बुज़ुर्गों की उम्र बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे उनमें सत्तावादी, भाग्यवादी और रूढ़िवादी प्रवृत्ति बढ़ती-जाती है । वृद्धजन रीति-रिवाजों, धर्म और परंपराओं पर चलने वाले होते हैं । युवाओं में अलग रहने और वृद्धजनों से असहयोग करने की प्रवृत्ति ने वृद्धजनों के कुशल क्षेम को दुष्प्रभावित किया है । युवा पीढ़ी की आर्थिक कमजोरी और निहित स्वार्थ के कारण वृद्धजनों की देखभाल की स्थिति बदतर होती जा रही है । पुनश्च, युवा और बुज़ुर्ग में अकेले किसी को प्रगतिवादी, प्रतिगामी तथा रूढ़िवादी नहीं कहा जा सकता है । कहीं-कहीं दोनो पीढ़ियाँ एकमत होती हैं और कहीं-कहीं मत वैभिन्न भी होता है । दोनों पीढ़ियों के मूल्य संक्रमण की अवस्था में हैं । संवादहीनता के कारण वृद्धजनों और युवाओं के बीच तनाव और असहजता का वातावरण है । वृद्धजनों के बीच युवा पीढ़ी के शिक्षा के स्तर में वृद्धि से वृद्धजनों से मेल-मिलाप बढ़ता है । कहा जाता है कि वृद्धजन में अपने अनुभव से युवा पीढ़ी को समृद्ध करने की क्षमता होती है । वृद्धजनों की मनोविनोदपूर्ण शैली से स्वयं उनके जीवन के साथ-साथ दूसरों का जीवन भी आसान हो जाता है । अतः वृद्धजनों को समय के साथ-साथ अपने विचारों में परिवर्तन करना आवश्यक है । वस्तुतः वृद्धजन दया के पात्र न होकर देखभाल के हकदार हैं । युवाओं को यह समझना चाहिए कि वे भी एक दिन वृद्ध होंगे और उस समय का युवाजन वृद्धजनों की समस्याओं के प्रति उदासीन होगा तो उन्हें भी वही दुःखानुभूति होगी। युवा और वृद्धजन अपनी ऊर्जा को नष्ट न करके एक दूसरे से मिलकर लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करें तो दोनों का जीवन आसान हो जाएगा।

संकेत शब्द

उपभोक्तावादी संस्कृति, पश्चिमीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, सत्तावादी प्रवृत्ति, संयुक्त परिवार, नाभिकीय परिवार, जनतांत्रिक परिवार, मूल्य संक्रमण, हठधर्मिता आदि ।

प्रस्तावना

देश, काल और परिस्थिति के अनुसार वृद्धजन स्वयं को ढ़ालकर ही सहज रूप से जीवन को सफल बना सकते हैं । ऐसा करने से पीढ़ी अंतराल के कारण उद्भूत समस्याएँ कम हो जायेगी (सेनगुप्ता, पदमिनी 1973) । वृद्धजनों की समस्याओं की जटिलता के कारण केवल परिवार द्वारा ही इनका निदान संभव नहीं, अपितु राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर समग्र प्रयास द्वारा ही इनका निदान संभव है (रेड्डी, पी. जयरामी एण्ड उषा रानी डी. 1998) । प्रगतिवादी और आधुनिक दृष्टिकोण से युक्त बुज़ुर्ग अपनी युवा संतति के करीब रहने की चाह रखते हैं । उनकी प्राथमिकता पृथक गृहस्थ के रूप में रहने की होती है, जिससे संतति के साथ संबंध सार्थक और स्थाई बना रहे (सरस्वती, एस. 1998) । नई और पुरानी पीढ़ी के मूल्य तीव्र गति से बदलने के कारण दोनों के बीच संबंध संक्रामण के दौर से गुजर रहा है । इसी कारण दोनों पीढ़ियों में किसी को भी निरपेक्ष रूप से अच्छा अथवा

बुरा नहीं कहा जा सकता (धनाग्रे, के.डी. 1988) । वस्तुतः वृद्धजन दया के पात्र न होकर देखभाल के हकदार हैं । उनके कल्याण के प्रति आस्थापरक प्रतिबद्धता की जरूरत है (भगवान प्रकाश 1994) ।

आधुनिक शिक्षा, पश्चिमीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण आदि प्रक्रियाओं के कारण नातेदारी संबन्धों में निहित एकजुट और सामंजस्य स्थापित करने की शक्ति का लोप होता जा रहा है । समाज में वृद्धजन और युवाजन के बीच संबंधों में विचलन हुआ है । पुराने एव नई पीढ़ी में अन्तर का आधार दोनों के बीच मूल्यों, अभिवृत्तियों, विश्वासों और व्यवहारिक मानकों में व्यापक मतवैभिन्य है । आपसी तालमेल की कमी, स्वस्थ्य संवाद की कमी के कारण नई और पुरानी पीढ़ी के बीच स्वस्थ्य संबंध का अभाव है (जोसेफ, जॉनी सी. 1988)। संयुक्त परिवार का नाभिकीय परिवार और नाभिकीय परिवार का जनतांत्रिक परिवार में परिवर्तन के कारण बुजुर्गों की सत्ता का ह्रास हुआ है (री, एफ. वान 1970) । न ही नई पीढ़ी वृद्धजनों के ज्ञान, अनुभव एवं मूल्यों का सम्मान कर रही है और न ही वृद्धजन अपनी अहमान्यता एवं हठधर्मिता के आगे नई पीढ़ी के प्रगतिवादी विचार से सामंजस्य स्थापित करने को सहमत हैं । यह भी सत्य है कि परिवार के बुजुर्गों की इच्छा अपनी संतति का कल्याण ही करना होता है । वृद्धजनों की स्वाभाविक कठोरता और रूढ़िवादी स्वभाव के कारण समायोजन में कठिनाई आ रही है (मलिक, अमल के. 1986) । भारत में उपभोक्तावादी संस्कृति भविष्य के लिए चुनौती एवं गंभीर खतरा है, क्योंकि यह हमारे सामाजिक नीव को झकझोर रही है (दुबे, श्यामाचारण, 2017) । उपभोक्तावादी संस्कृति के आलिंगन में नई पीढ़ी बुजुर्गों के प्रति अपने दायित्वों को भूलती जा रही है । युवा पीढ़ी में बुजुर्गों के प्रति सम्मान समाप्त हो रहा है (दुबे, श्यामाचारण, 2015) । आज संबंधों के बंजर खेत में स्वार्थ का बीज पनप रहा है, जहाँ प्रेम का अभाव ही दृष्टिगोचर हो रहा है । नई पीढ़ी ऐसे समय अपने दायित्वों को जानबूझकर भुला देती है(लाल, विमला, 2010) । जब वृद्धजनों के जीवन की संध्याबेला में अपनों के संबल की आवश्यकता होती है । युवाजनों में वृद्धजनों के प्रति आदर भाव का लोप होता जा रहा है तथा वृद्धजनों के व्यवहार में लोच की कमी के कारण युवाओं के साथ समायोजन नहीं हो पा रहा है ।

भारत परंपरागत समाज रहा है । आज के सूचना-प्रौद्योगिकी प्रधान दुनियाँ ने आस्थापरक मूल्य को ही विलुप्त कर दिया है । हम आज अपने ही माता-पिता के प्रति सेवाभाव और कर्त्तव्यपरायण्ता से विमुख हो गए हैं (दीक्षित, सीमा 2016) । औद्योगीकरण, नगरीकरण, एकल परिवार का प्रचलन आदि के कारण सामाजिक जीवन में अनेक चुनौतियाँ प्रस्तुत हो रहीं हैं, जिनसे वृद्धजन अछूते नहीं हैं । आज की तेजी से बदलती परिस्थितियों में परंपरागत रूप से उच्च प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त वृद्धजनों को अपने ही परिवार में वंचना का शिकार होना पड़ रहा है । युवा पीढ़ी परंपरागत मूल्य और मानदण्ड से विमुख हो रही है । नई पीढ़ी वृद्धजनों के प्रति दायित्वों से विमुख होता जा रहा है । बुजुर्गों के साथ स्वस्थ्य अन्तःक्रिया, सम्मान, सहानुभूति और प्रेम के बजाय युवा पीढ़ी में विमुखता की प्रवृत्ति बढ़ रही है । जिस संतति ने वृद्धजनों की उंगली पकड़कर चलना सीखा, आज वही वृद्धजन वंचना और विमुखता का शिकार हो रहा है । नई पीढ़ी अपने प्रजननमूलक परिवार के साथ भावनात्मक जुड़ाव और कुशलक्षेम की तुलना में अपने वृद्ध माता-पिता, दादा-दादी आदि को वंचनाओं के पंक में धकेल रहा है । नई पीढ़ी अपने बच्चों के खानपान, रहन-सहन और शिक्षा पर खर्च तो सहर्ष करती है, किंतु परिवार के बुजुर्ग के ऊपर खर्च को बोझ समझती है । कहीं-कहीं वृद्धजन अनेक संतानों के बीच साझे की सूई के बोझ की तरह जीवन जीने के लिए अभिशप्त हैं ।

अध्ययन के उद्देश्यः

1. बुजुर्गों और युवा पीढ़ी के बीच संबंधों का अध्ययन करना।
2. बुजुर्गों की देखभाल की व्यवस्था के सापेक्ष संतानों द्वारा स्वयं के प्रजननमूलक परिवार हेतु की गयी व्यवस्था का तुलनातमक अध्ययन करना ।
3. युवाओं और वृद्धजनों के बीच बेहतरी के कारणों का अध्ययन करना ।

अध्ययन क्षेत्रः

प्रस्तुत शोध अध्ययन का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के जौनपुर जनपद के सिकरारा प्रखण्ड के 100 वृद्धजनों को उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से चुना गया है । शोध हेतु 60 वर्ष या उससे ऊपर की उम्र के वृद्धजनों का ही चयन किया गया है ।

शोध अभिकल्पः

निर्णय क्रियान्वित करने से पूर्व ही निर्णय निर्धारित करना प्ररचना है, जिसका निर्धारण समस्या और परिकल्पना के अनुसार ही होता है (एकॉफ, आर. एल.) । चूँकि, प्राथमिक तथ्य आधारित सारणीयन एवं विश्लेषण कर निष्कर्ष का निगमन होना है, अतः प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णनात्मक शोध अभिकल्प उचित है । इस अध्ययन में समस्या के स्वरूप को प्रस्तुत किया जाता है और उसके कारणों को खोजा जाता है ।

तथ्य संकलनः

प्रस्तुत शोध हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों के संकलन के लिए अवलोकन तथा साक्षात्कार अनुसूची के अनुसार साक्षात्कार तथा संबन्धित साहित्य, जनगणना की रिपोर्ट, सरकारी आंकड़े, इंटरनेट आदि का उपयोग किया गया है ।

परिकल्पनाएँः

परिकल्पना ही वह धूरी है जिस पर सम्पूर्ण अनुसंधान टिका होता है, जो अनुसंधानकर्त्ता और अनुसंधान का ध्रुवतारा की तरह मार्गदर्शन तथा दिशा को निर्धारित करती है । श्रीमती पी. वी. यंग के अनुसार, ''उपकल्पना का प्रयोग एक दृष्टिहीन खोज से रक्षा करना है ।'' कहा जाता है कि उपकल्पनाएँ वे लोरियाँ है, जो असावधान को गाना गाकर सुला देती हैं । प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया हैः

1. बुज़ुर्ग अपने ही संतति के द्वारा देखभाल से वंचित हैं ।
2. बुज़ुर्गों के प्रति युवा पीढ़ी में असम्मान का मुख्य कारण युवाओं का स्वयं के प्रजननमूलक परिवार के कुशल क्षेम तक सीमित कर लेना है ।
3. बुज़ुर्ग और युवा पीढ़ी के परस्पर स्वस्थ्य संवाद से दोनों को लाभ होगा ।

आप परिवार में किसके साथ रहते हैं ?

सारणी संख्या 01

क्र. सं.	किसके साथ रहते हैं ?	संख्या	प्रतिशत
1	वृद्ध पति-पत्नी संतति के परिवार के साथ रहते हैं ।	63	63
2	वृद्ध दम्पति गांव में अकेले रहते हैं ।	6	6
3	विधवा माँ संतति के परिवार के साथ रहती हैं ।	19	19
4	विधुर पिता संतति के परिवार के साथ रहता हैं ।	12	12
योग		100	100

उल्लेखनीय है कि 63 प्रतिशत बुज़ुर्ग युगल अपनी संतति के परिवार के साथ रहते हैं और 6 प्रतिशत गांव में अकेल रहते हैं तथा संतति अपने परिवार के साथ परदेश में रहते हैं । इसी प्रकार 19 फीसदी वृद्ध विधवा माँ अपनी संतति के परिवार के साथ रहती हैं और 12 प्रतिशत विधुर पिता संतति के परिवार के साथ रहते हैं ।

आपका जीवन निर्वाह किनके साथ होता है ?

सारणी संख्या 02

क्र. सं.	जीवन निर्वाह की स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	अकेले ही जीवन निर्वाह करते हैं ।	4	4
2	जीवन साथी और अन्य सदस्यों के साथ जीवन निर्वाह करते हैं ।	57	57
3	संतति के साथ ही जीवन निर्वाह करते हैं ।	36	36
4	रिश्तेदारों के साथ ही जीवन निर्वाह करते हैं ।	3	3
योग		100	100

उपर्यक्त तालिका से स्पष्ट है कि 4 प्रतिशत वृद्धजन निर्वाह करते हैं । इनमें से अधिकतर ऐसे हैं जिनकी संताने परदेश में रहती हैं । इसी प्रकार 57 प्रतिशत बुज़ुर्ग जीवन साथी के साथ संयुक्त परिवार में जीवन निर्वाह करते हैं तथा उनकी संताने या तो नहीं हैं या संताने हैं तो भी नगर में रहती हैं । 36 प्रतिशत वृद्धजन ऐसे हैं जो अपनी संतानों के साथ ही संतति के साथ ही जीवन निर्वाह करते हैं । ऐसे वृद्धजन जो अपने रिश्तेदारों के साथ ही जीवन निर्वाह करते हैं उनकी प्रतिशतता 3 है ।

क्या आप परिवार में वंचित अनुभव करते हैं ?

सारणी संख्या 03

क्र. सं.	देखभाल में वंचन की अनुभूति	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	63	63
2	नहीं	37	37
योग		100	100

स्पष्ट है कि 63 फीसदी वृद्धजन ऐसे हैं जो परिवार में अपने संतति द्वारा स्वयं के प्रजननूलक परिवार के प्रति जिम्मेदारियों को वहन करने की तुलना में कम ध्यान दिया जाता है । वृद्धजनों में 37 प्रतिशत ऐसे हैं जो अपनी संतति के द्वारा प्रजननमूलक परिवार को दी गयी सुविधाओं की तुलना में वंचित महसूस नहीं करते हैं । ऐसे वृद्धजनों का कहना है कि उनके साथ परिवार की युवा पीढ़ी कोई भेदभाव नहीं करती है ।

आपको वंचन के दंश को क्यों झेलना पड़ता है ?

सारणी संख्या 04

क्र. सं.	देखभाल में वंचना का कारण	संख्या	प्रतिशत
1	भावनात्मक अलगाव	39	61.9
2	स्वयं की आर्थिक बदहाली	24	38.1
योग		100	100

स्पष्ट है कि 61.1 प्रतिशत वृद्धजन कहते है कि वे बच्चों के भावनात्मक जुड़ाव से वंचित हो रहें हैं । कुछ वृद्धजनों ने कहा कि जीवन साथी न होने के कारण संताने उचित व्यवहार नहीं करतीं और बहुयें पराये घर से आकर हमारी संतानों को हमसे अलग कर दीं हैं । पारिवारिक कलह, अमर्यादित व्यवहार, तिरष्कार आदि के कारण वृद्धजन भवनात्मक रूप से वंचन का शिकार हो रहे हैं । 38.1 प्रतिशत बुजुर्ग ऐसे हैं जो स्वयं की आर्थिक बदहाली के कारण वंचना के शिकार होने की बात करते हैं । इनका कहना है कि यदि अपने पास बैंक बैलेंस होता तो परिवार तिरस्कार नहीं करता । बच्चे अपने सीमित संसाधन को अपने पत्नी और बच्चों पर खर्च करते हैं । पुनश्च, वंचित वृद्धजनों का कहना है कि संतानों का उनके प्रति प्रेम और भावनात्मक जुड़ाव भैतिक सुख सुविधा से ज्यादा महत्त्वपूर्ण है । अनेक बार तिरस्कृत होने के बावजूद हम वृद्धजनों की हार्दिक इच्छा होती है कि हमारी संतानें हमसे बातचीत करें ।

परिवार के लोग आपसे कैसा व्यवहार करते हैं ?

सारणी संख्या 05

क्र. सं.	परिवार के लोगों के साथ व्यवहार कैसा है ?	संख्या	प्रतिशत
1	परिवार के लोग निर्णयों में सलाह लेते हैं और भावनात्मक जुड़ाव रखते हैं ।	34	34
2	परिवार के लोग केवल भावनत्मक जुड़ाव रखते हैं ।	12	12
3	परिवार के लोग न ही भावनात्मक जुड़ाव और न ही निर्णयों में सलाह लेते हैं ।	47	47
4	परिवार के लोगों के साथ कभी-कभी अन्तःक्रिया होती है ।	7	7
योग		100	100

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि 34 प्रतिशत वृद्धजनों के साथ उनके परिवार वाले भावनात्मक जुड़ाव रखने के साथ-साथ निर्णयों में भी विश्वास में लेते हैं, परन्तु 12 प्रतिशत वृद्धजनों के साथ परिवारजन केवल भावनात्मक जुड़ाव रखते हैं । इसी प्रकार 47 प्रतिशत बुजुर्गों का कहना है कि उनके साथ परिवार वाले न तो भावनात्मक जुड़ाव रखते हैं और न ही निर्णयों में किसी प्रकार की भूमिका को स्वीकार करते हैं । सात प्रतिशत वृद्धजन या तो अकेले रहते हैं या अपने जीवन साथी के साथ रहते हैं और ये कभी-कभी ही अपने संतति के साथ अन्तःक्रिया करते हैं । इन सात प्रतिशत वृद्धजनों की संतति और रिश्तेदारों के साथ अनौपचारिक संबन्ध और समायोजन का अभाव है ।

निष्कर्ष एवं सुझाव

वृद्धजनों के जीवन को वंचनाओं से रक्षा करने की आवश्यकता है, जिससे वे गरिमामय जीवन जी सकें । इसके लिए जहाँ एक ओर सरकार द्वारा कठोर और व्यावहारिक कानून बनाने की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर पीढ़ी अंतराल और संघर्ष को समाप्त करने के लिए परस्पर संवाद और स्वस्थ्य अन्तःक्रिया को बढ़ावा देने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर सक्रिय प्रयास की आवश्यकता है । आज आवश्यकता इस बात की है कि परिवार, समाज और राज्य वृद्धजनों की मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्यपरक सुरक्षा प्रदान करें ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सेनगुप्ता, पदमिनी 1973: ''दी ओल्ड एण्ड दी यंग'' इन सोशल वेलफेयर, वोल. 19 ।

2. रेड्डी, पी. जयरामी एण्ड उषा रानी डी. 1998: दी फ्रैल इल्डर्लीः ऐन इण्टरजेनेरेशनल एनालिसिस(आईएसए पेपर); स्पेन इण्टरनेशनल सोशियोलॉजिकल एसोसिएसन ।

3. सरस्वती, एस. 1998: माडर्नाइजेशन, फेमिली चेन्ज एण्ड इन्टरजेनेरेशनल रिलेशन्सः ए स्टडी इन तमिलनाडु (आईएसए पेपर); मैड्रिड, स्पेन, आईएसए ।

4. धनाग्रे, के.डी. 1988: ''क्राइसिस ऑफ वैल्यूजः ए सोशियोलॉजिकल स्टडी ऑफ दी ओल्ड एण्ड दी यंग'' इन रोज, ए.बी. एण्ड धनाग्रे, के.डी. (ईडीएस.) दी एजेइंग इन इण्डियाः प्रोब्लेम्स एण्ड पोटेन्शियलिटीज; न्यू दिल्ली, अभिनव प्रकाशन ।

5. भगवान प्रकाश 1994: ''दी रोल ऑफ यूथ इन इम्पावरिंग दी एजेड'' इन रिशर्च एण्ड डेवेलपमेंट जर्नल, वोल. 1 ।
6. जय 1968: ''ऐंग्री ओल्ड एण्ड इनडिफरेंट यंग'' इन थॉट, वोल. ।
7. भावे, विनोवा 1970: ''अपील फॉर कॉन्कोर्ड विटविन यंग एण्ड ओल्ड'' इन सर्वोदय, वोल. 20, नं. 6, दिसम्बर ।
8. जोसेफ, जॉनी सी. 1988: ''इन्टरैक्शन विटविन दी ओल्ड एण्ड दी यंग'' इन सोशल वेलफेयर, वोल. 35, नं. 6, सितम्बर ।
9. री, एफ. वान 1970: कोलाइडिंग जेनेरेशन्सः वाराणसी, नवचेतना प्रकाशन ।
10. मलिक, अमल के. 1986: ''ट्राई जेनेरेशनल डिफरेंसेज इन वैल्यूज'' इन साइकोलॉजिकल रिशर्च जर्नल, वोल. 10, नं. 1-2, जून-दिसम्बर ।
11. दुबे, श्यामाचरण (2017), समय और संस्कृति; (सातवाँ संस्करण), दिल्लीः वाणी प्रकाशन ।
12. दुबे, श्यामाचरण (2015), भारतीय समाज; नई दिल्लीः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, पेज ।
13. लाल, विमला (2010), वृद्धावस्था का सच; नई दिल्ली, कल्याणी शिक्षा परिषद, पेज ।
14. दीक्षित, सीमा (2016), वृद्धावस्था की दस्तक; नई दिल्ली, सामयिक बुक्स, पेज ।
15. एकॉफ, आर.एल., ''डिजाइन ऑफ सोशल रिसर्च'' ।
16. यंग, पी.वी., ''साइंटिफिक सोशल सर्वे एण्ड रिसर्च'', 1953 ।